सच कहने की ताकत

जालंधर ब्रीज

साप्ताहिक समाचार पत्र

• RNI NO.:PUNHIN/2019/77863 • www.jalandharbreeze.com

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY • YEAR-1 • EDITOR: ATUL SHARMA • 23 NOVEMBER TO 29 NOVEMBER 2019 • VOLUME-15• PAGES- 4 • RATE- 3/- • Mobile: 99881-15514 • email:atul_editor@jalandharbreeze.com

सफलता की कुंजी

अज्ञानी होना कभी भी गलत नहीं होता, लेकिन हमेशा अज्ञानी ही बने रहना गलत होता है

-स्वामी विवेकानंद

अनमोल विचार

कोई भी काम तब तक ही असंभव लगता है जब तक की उसको किया नहीं जाता

खबर का असर या सबर का असर

■ जालंधर से प्रभात सूरी की विशेष रिपोर्ट

जो भी हो जालंधर ब्रीज समाचार का मुख्य उद्देश्य है आम जनता की दिक्कतों को दूर करने के लिए जिम्मेवार प्रशासन को जगाना। जालंधर ब्रीज द्वारा गत कई माह से नैशनल हाईवे अथारिटी को जगाने का प्रयास करते आ रहे है इसी के परिणामस्वरूप जालंधर पठानकोट रोड़ पर नियमों की धज्जीयां उड़ा रही ठेका प्राप्त कंपनी के नैशनल हाईवे के अधिकारीयों की मिलीभगत को पिछले अंकों में प्रकाशित किया गया था जिसमें पैदल रोड़ क्रासिंग जो कि गंभीर समस्या थी उसको बड़े स्तर पर आवाज को बुलंद किया गया था और अवैध रूप से रोड़ क्रासिंग को रोकने के लिये नैशनल हाईवे द्वारा टूटी ग्रिलों की जगह नई ग्रिले लगवाई जा रही है और भी कड़े कदम उठाने बाकी है ताकि आम जनता जो प्रतिदिन हादसों का शिकार हो रही है चाहे तेज रफ्तार गाड़ियों द्वारा या त्रुटिपूर्ण सड़क निर्माण द्वारा रोड़ साईन की कमी एवम रोड़ क्रासिंग हेतु ओवर ब्रिजस के ना होने के परिणामस्वरूप जिस जनता के खून- पसीने की कमाई का बड़ा भाग आयकर (इन्कम टैक्स) देने में फिर टोल टैक्स देने में रोड़ टैक्स देने में केवल इसलिए कि उसे मूल भूत सुविधाये जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा एवम जीने के लिए खाद्य आपूर्ति एवम सुरक्षा जैसा सविधान में मौलिक अधिकार दिये गये है परन्तु प्रशासन में बैठे उन सोये हुए लोगों को केवल एक ही अधिकार याद है निहित स्वार्थ निजी लाभ के लिये वर्षो पहले बने ओवर ब्रिजस के ढांचे जो हाईवे के किनारे पड़े जंग से गल रहे है केवल मोटी कमीशन के लिए बनवा कर रख लिए गये है उन ढांचों का उपयोग कब होगा जबकि सड़क क्रासिंग करते हुये कई लोग हादसों का शिकार हो रहे है कई जगह हाईवे पर सड़क बैठ गई है जो दुर्घटनाओं का कारण बनती है।

उन जगहों पर खतरे का कोई संकेत नहीं लगाया जाता है विशेषकर रात्रि में तो यह दिखाई नहीं देता जैसे-जैसे सर्दी बढ़ रही है धुंध भी बढ़ने लगी है परन्तु लाईट्स का विशेष कर फल्ड लाईटस का प्रबंध होना चाहिए, टोल प्लाजा पर यात्रियों के लिए मूलभूत जन सुविधाएं न के बराबर है प्राथमिक चिकित्सा एवम जल पान तक प्राप्त नहीं, रोड पैट्रोलीग पार्टियों द्वारा केवल रोड़ पर गाड़ी दौड़ाना मात्र ही पैट्रोलीग नहीं सड़क पर हो रहे यातायात के कारण कहां त्रुटि आई है उसे तुरन्त पूरा किया जाये यह नैशनल हाईवे अथारिटी की जिम्मेवारी है।

अर्ध-निर्मित सड़कों पर टोल टैक्स प्लाजा पर ध्यान देना चाहिए आये दिन टोल प्लाजा पर तैनात कर्मचारीयों और अधिकारीयों द्वारा आम जनता से व्यवहार ठीक नहीं चल रहा झगड़े होते है कई-कई जगह तो बकाया के रूप में टाफियां दी जाती है ऐसी हरकतों पर प्रशासन को ध्यान देना ही होगा।

कई ऐसे स्थान है जहां हाईवे पर निर्माण प्रभावशाली व्यक्तियों की आवश्यकता के अनुसार होता है वहां नियम कानून दर-किनार कर दिए जाते है यह भी देखा जाता है परन्तु जालंधर ब्रीज द्वारा जनहित मुद्दों वाली खबर का असर या सबर का असर देखने को मिलेगा।

जालंधर ब्रीज के पिछले अंक में छपी हुई खबर

हम तो दूध के धुलें हैं सारा कसूर तो जिला प्रशासन का है

नैशनल हाईवे विभाग

■ जालंधर से प्रभात सूरी की विशेष रिपोर्ट

जो पानी की समस्या हाईवे पर है उसके लिए विभाग द्वारा जिम्मेदार नगर निगम को ठहराया गया है जिस में उसने अपने जवाब में ये बताया है कि नगर निगम द्वारा मौके पर मौजूद दुकानदार, उद्योगिक घराने, ढाबे व अन्य लोगों द्वारा हमारी नाली में अपने गंदे पानी की पाईप डाल दी गई है

कहानी का तेरी मैंने यकीं तो कर लिया लेकिन हकीकत एक दिन फिर से तेरी आँखों से पूछूंगा

National Highways Authority of India

जालंधर ब्रीज में प्रकाशित हुई खबर का असर : टूटी हुई ग्रिलों की जगह नई ग्रिलें लगाते हुए नैशनल विभाग के कर्मचारी।

किसकी मर्जी से सड़क का लैवल बदल देते है अफसर

लोकल बाडी विभाग

■ जालंधर से प्रभात सूरी की विशेष रिपोर्ट

वैसे तो सरकारी अफसर निर्माण कार्य करवाते इसलिये है कि अगर निर्माण होंगे तो उसकी एवज में ठेका प्राप्त कंपनी से बिल पास करने के टाईम पर उससे कमिश्न की वसूली की जा सके परन्तु हैरानी की बात तो यह देखने को मिलती है कि इन अफसरों द्वारा सड़क के निर्माण करवाते वक्त बड़े स्तर पर लापरवाही दिखाई जाती है कि पुरानी सड़क को खोद कर बनाने की बजाये अफसरों द्वारा उसी के ऊपर लुक बजरी डलवा-डलवा कर ठेकेदार को तो फायदा पहुंचाया ही जा रहा।

परन्तु लोगों के मकान के लैवल को नीचे कर दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप लोगों के घरो के अन्दर बरसाती पानी चल जाता है जिस कारण उनको घर के सामान के साथ-साथ गंभीर बिमारियों का भी सामना करना पड़ता है क्यों नहीं इन भ्रष्ट अफसरों की जांच होनी चाहिए कि यह किस एक्ट की प्रोविजन से लोगों के मकान को रोड़ से नीचा करने का अधिकार रखते है। यह एक बहुत ही गंभीर समस्या है ओर इससे लोगों की करोड़ों रूपये की संपत्ति को नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

क्या शरद परिवार ने अजित को माफ कर दिया ? रोहित पवार ने दिया बड़ा बयान

■ मुंबई/न्यूज नेटवर्क

मुंबई। राकांपा विधायक रोहित पवार ने बुधवार को कहा कि उन्हें भरोसा था कि उनके चाचा अजित पवार पार्टी में लौट आएंगे और उन्हें खुशी है कि अजित पवार ने पार्टी प्रमुख शरद पवार से मुलाकात की। उन्होंने यह भी कहा कि पवार परिवार ''एकजुट'' है और हमेशा रहेगा। अजित पवार ने देर रात अपने चाचा और राकांपा के दिग्गज नेता शरद पवार से मुलाकात की थी। अजित के महाराष्ट्र में सरकार बनाने के लिए भाजपा से हाथ मिलाने और फिर इस्तीफा देने के बाद यह शरद पवार से पहली मुलाकात थी। शरद पवार के बड़े भाई अप्पासाहेब पवार के पोते रोहित पवार ने एक समाचार चैनल से कहा, ''मैं भरोसा नहीं कर पाया कि यह कैसे हुआ। एक कार्यकर्ता के तौर पर मुझे इसकी विस्तृत जानकारी नहीं है। परिवार के सदस्य के तौर पर कुछ कशमकश थी, मैं समझ नहीं सका कि क्या हो रहा है।'' उनसे पूछा गया था कि

भाजपा के साथ हाथ मिलाने के बाद अजित पवार के उपमुख्यमंत्री पद की शपथ लेने पर उन्हें कैसा लगा था। रोहित पवार ने कहा, ''लेकिन हमें उनकी वापसी का पूरा यकीन था। हम दादा को बहुत अच्छी तरह जानते हैं।'' अजित पवार की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा कि वह बहुत सक्षम प्रशासक हैं और शिवसेना-राकांपा-कांग्रेस 'महाराष्ट्र विकास अघाड़ी' के लिए महत्वपूर्ण है जो राज्य में सरकार बनाएगी। उन्होंने कहा, ''इसलिए मुझे लगा कि परिवार के सदस्य और राकांपा कार्यकर्ता के तौर पर जब दादा कल साहेब (शरद पवार) से मिले तो मुझे खुशी हुई।'' रोहित पवार ने भाजपा पर अन्य दलों से नेताओं की खरीद-फरोख्त का हथकंडा अपनाने का भी आरोप लगाया। रोहित ने कहा, ''उन्होंने इस मामले में भी कुछ हद तक इस शैली (हथकंडे) का इस्तेमाल किया। दादा को यह पसंद नहीं आया होगा और फिर उन्होंने साहेब से मुलाकात की। मुझे उम्मीद है कि हम उनके (अजित) मार्गदर्शन में जल्द ही लोगों की सेवा करेंगे।''

कार्टोसैट-3 सैटेलाइट सफलतापूर्वक लॉन्च, अब दुश्मनों के चप्पे-चप्पे पर होगी हिन्दुस्तान की नजर

■ चेन्नई/न्यूज नेटवर्क

पृथ्वी पर नजर रखने वाले भारत के उपग्रह कार्टोसैट-3 और अमेरिका के 13 नैनो उपग्रह लेकर जा रहे पीएसएलवी-सी47 का बुधवार को सुबह श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) से प्रक्षेपण किया गया। एक आधिकारिक बयान में बताया गया कि पीएसएलवी-सी47 ने कार्टोसैट-3 को सफलातपूर्वक अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित कर दिया। यह कार्टोसैट श्रृंखला का नौवां उपग्रह है जिसे यहां से 120 किलोमीटर दूर श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के द्वितीय लांच पैड से प्रक्षेपित किया गया। इसरो ने मंगलवार को कहा था कि पीएसएलवी-सी47 अभियान के प्रक्षेपण के लिए श्रीहरिकोटा में आज सुबह सात बजकर 28 मिनट पर 26 घंटे की उल्टी गिनती शुरू हो गई । इसे 27 नवंबर बुधवार को सुबह नौ बजकर 28 मिनट पर प्रक्षेपित किया जाना है। पीएसएलवी-सी47 की यह 49वीं उड़ान है जो कार्टोसैट-3 के साथ अमेरिका के वाणिज्यिक उद्देश्य वाले 13 छोटे उपग्रहों को लेकर अंतरिक्ष में जाएगा।

क्या है कार्टोसैट-3 की खासियत ?

कार्टोसैट-3 तीसरी पीढ़ी का बेहद चुस्त और उन्नत उपग्रह है जिसमें हाई रिजोल्यूशन तस्वीर लेने की क्षमता है। इसका भार 1,625 किलोग्राम है और यह बड़े पैमाने पर शहरी नियोजन, ग्रामीण संसाधन और बुनियादी ढांचे के विकास, तटीय

कार्टोसैट-3 का जीवनकाल पांच साल का होगा

भूमि के उपयोग तथा भूमि कवर के लिए उपभोक्ताओं की बढ़ती मांग को पूरा करेगा। इसरो ने कहा कि पीएसएलवी-सी47 'एक्सएल' कनफिगरेशन में पीएसएलवी की 21वीं उड़ान है।

न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड, अंतरिक्ष विभाग के वाणिज्यिक प्रबंधों के तहत इस उपग्रह के साथ अमेरिका के 13 नैनो वाणिज्यिक उपग्रहों को भी प्रक्षेपित किया जा गया। इसरो ने बताया कि श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से यह 74वां प्रक्षेपण यान मिशन है। कार्टोसैट-3 का जीवनकाल पांच साल का होगा। कार्टोसैट-3 तथा 13 अन्य नैनो उपग्रहों का प्रक्षेपण गत 22 जुलाई को चंद्रयान-2 के प्रक्षेपण के बाद हो रहा है।

उक्ति

अपने किसी एक काम से किसी एक व्यक्ति का दिल खुश कर देना, प्रार्थना के लिए अपने सिर को हजारों बार ईश्वर के सामने झुकाने से ज्यादा बेहतरीन होता है।

■ महात्मा गांधी

www.jalandharbreeze.com

साप्ताहिक

• साप्ताहिक 23 नवंबर से 29 नवंबर 2019

जालंधर ब्रीज

दखल

सोशल मीडिया दे रहा कुंठा

सोशल मीडिया ने संचार और संवाद करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। सोशल मीडिया और गैजेटों की लत के कारण युवाओं में शारीरिक और मानसिक व्याधियां तेजी से बढ़ रही हैं। इससे उनमें निराशा व कुंठा पनप रही है और एक नए प्रकार की सांस्कृतिक विसंगति को जन्म दे रही हैं। यह संस्कृति न केवल सामाजिक संबंधों में उनकी सहभागिता को कम करती है अपितु उन्हें भय एवं आक्रामकता का शिकार बनाती है।

सहस्राब्दि जनसंख्या का 80 प्रतिशत हिस्सा संदेश लिख कर या ऑनलाइन संवाद करना ज्यादा पसंद करता है। यह खुलासा ऑफकॉम के अध्ययन में हुआ है। इसके अनुसार 16 से 24 वर्ष की आयु के 15 फीसद युवा अपने फोन का इस्तेमाल लोगों से बातचीत के लिए नहीं करना चाहते, बल्कि मौखिक बातचीत के स्थान पर वे संदेश भेजना अधिक पसंद करते हैं। आज की किशोर पीढ़ी एक ही कमरे में अपने आसपास बैठे लोगों से बात करने के बजाय संदेश ही भेजती है। दरअसल, हम एक शोर रहित और आवाज रहित विश्व का हिस्सा बन चुके हैं। सार्वजनिक स्थानों पर होते हुए भी एक निजी विश्व निर्मित हो जाता है, जैसे भीड़ में, ट्रेन में, सड़क पर कहीं भी चलते हुए या बैठ कर हम ईअरफोन के जरिए अपना प्रिय संगीत सुन सकते हैं। जबकि एक-दो दशक पहले तक ट्रेन या बस में यात्रा करते समय लोग एक-दूसरे से बातचीत करके परिचय बढ़ाने में रुचि रखते थे, राजनीतिक व गैर-राजनीतिक विषयों पर चर्चा करते थे, खाना-पीना साझा करते थे, लेकिन अब यात्रा के दौरान ऐसा कोई शोर नहीं सुनाई देता और कोई अनुभव नहीं होता। अधिकांश लोगों के कानों में ईअरफोन या हेडफोन नजर आता है, या मोबाइल, लैपटॉप पर वीडियो देखने में व्यस्त होते हैं। संभवतः इसलिए इस पीढ़ी को 'खामोश पीढ़ी' की संज्ञा दी जाती है।

अब इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि सोशल मीडिया ने संचार और संवाद करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। एक समय था जब लोग देर तक लैंडलाइन फोन पर अपने दोस्तों, परिवारजनों से बातचीत करते थे, विशेष अवसरों जैसे सालगिरह, त्योहार, पदोन्नति, नया सामान खरीदने इत्यादि पर फोन पर बधाई का तांता लग जाता था। मगर अब हर अवसर पर केवल संदेश भेज कर काम चल जाता है। कितना अजीब है कि एक ही संदेश हम सबको भेज देते हैं? यह कैसे संभव है कि सबके लिए हमारी भावनाएं, हमारा प्यार या दुआएं एक जैसी हों? और यह भी सच है कि आमने-सामने या फोन की आवाज पर जो बधाई मिलती है, उसमें अलग ही आनंद आता है क्योंकि उसमें हंसी-मजाक और बहुत सारी दुआएं भी शामिल होती हैं। सोशल मीडिया ने इन सब चीजों को सामाजिक जीवन से गायब कर दिया है। मनुष्य केवल खुद तक सीमित हो गया है, इसलिए शायद अब सेल्फी का जमाना है, समूह फोटो का नहीं। फिर चाहे होटल में खाना खाते समय या किसी मॉल में घूमते समय, या शादी पार्टी के लिए तैयार होते समय सेल्फी लीजिए और तुरंत फेसबुक अथवा सोशल मीडिया पर अपलोड कर दीजिए, ताकि आपकी फोटो पर अधिक से अधिक कमेंट और लाइक मिल सकें।

यदि आप यह सब नहीं करते तो आज के युग में आप सामाजिक प्राणी नहीं हैं, आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा तुलनात्मक रूप से कम हो सकती है। सामाजिक प्राणी और विकसित मस्तिष्क का स्वामी होने के नाते मनुष्य के लिए भाषा को संपर्क एवं संवाद स्थापित करने का सबसे प्रचलित व प्रभावी माध्यम माना जाता है। भाषा विज्ञानी सॉसर के अनुसार भाषा एक सामाजिक उत्पाद और वैयक्तिक व्यवहार दोनों है। अब सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ने के बाद लोगों में संवाद या तो कम हो गया है या संदेशों में बदल गया है। जैसे-जैसे संवाद खत्म हो रहा है, वैसे-वैसे संस्कृति खत्म हो रही है, क्योंकि संस्कृति का पतन संवादहीनता से ही होता है। संस्कृति के भीतर संवेदनाएं, भावनाएं, अनौपचारिकता और अपनत्व की भावना होती है। संदेश-संस्कृति से जन साहित्य खत्म हो रहा है, इससे संस्कृति मर रही है। चूंकि संस्कृति जीवंत अनुभव होती है। यह टेक्नोलॉजी निर्देशित सभ्यता आने वाले दौर में संस्कृति की हत्या का औजार बनेगी। क्या प्रौद्योगिकी का मनुष्य पर हावी होना तो विश्व युद्ध की आहट का संकेत दे रहा है? मौखिक संचार करने की शैली से व्यक्ति में भाषा विशेषज्ञता उत्पन्न होती है और उसमें अनुवाद करने की भी समझ विकसित होती है। संदेशों के माध्यम से नीरसता उत्पन्न हो रही है क्योंकि एक ही संदेश सबको भेज दिया जाता है, यहां तक कि अधिकांशतः बिना पढ़े ही संदेश दूसरों के आगे फॉरवर्ड कर दिए जाते हैं, बिना जांचे कि वे सही हैं या गलत।

ऐसा नहीं है कि सोशल मीडिया ने सकारात्मक पक्षों को उत्पन्न नहीं किया। आज ऐसे बहुत से लोग हैं जो बोलना चाहते थे, पर उन्हें कोई मंच उपलब्ध नहीं था। आज सोशल मीडिया ने उन्हें वह मंच दिया है जहां वे अपनी बात रख सकते हैं, अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं और लोग ऐसा कर भी रहे हैं। परंतु यह भी सच है कि कोई भी टेक्नोलॉजी अपने आप में बुरी नहीं होती। उसका सदुपयोग या दुरुपयोग उसे अच्छा या बुरा साबित करता है। सोशल मीडिया ने मौन की संस्कृति, आक्रामकता की संस्कृति और विरोध की संस्कृति को तीव्र किया है। ये तीनों एक सीमा तक तो लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए ठीक हैं, लेकिन इनसे लोकतंत्र के लिए खतरा भी उत्पन्न हुआ है। राजनीतिक उद्देश्यों के लिए जब व्यक्ति सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, मीडिया कितना सही है कितना गलत, कौन-सी खबर सच है और कौन-सी झूठ, पुरानी सूचनाओं को कितने गलत तरीके से पेश किया जा रहा है, यह सब क्यों किया जा रहा है, जानना ज्यादा आवश्यक है। मीडिया खासतौर पर सोशल मीडिया जिस प्रकार की भूमिका निभा रहा है, वह संदेह के घेरे में है।

युवा पीढ़ी इस वक्त एक ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रही है जो अनेक प्रकार की सामाजिक चिंताओं को उत्पन्न करता है। सोशल मीडिया के प्रति युवाओं के एक बहुत बड़े हिस्से का आकर्षण इसके आदी होने के स्तर तक जा पहुंचा है। वह सामाजिक जीवन के एक बहुत बड़े भाग को प्रभावित एवं निर्धारित करने लगा है। देर रात तक चैटिंग करना या फिर ऑनलाइन गेम खेलना, सेल्फी लेने का शौक, वॉट्सएप का अनवरत प्रयोग करना और अध्ययन सामग्री के लिए विभिन्न साइटों की खोज में संलग्न रहना, वे पक्ष हैं जो यह दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया ने सामाजिक जीवन को व्याधिकीय स्तर तक प्रभावित किया है। इसीलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऑनलाइन गेम खेलने की लत को मानसिक रोग की श्रेणी में शामिल किया है। सोशल मीडिया और गैजेटों की लत के कारण युवाओं में अब शारीरिक और मानसिक व्याधियां तेजी से बढ़ रही हैं। इससे निराशा व कुंठा पनप रही हैं और एक नए प्रकार की सांस्कृतिक विसंगति को जन्म दे रही हैं। यह संस्कृति न केवल सामाजिक संबंधों में उनकी सहभागिता को कम करती है अपितु उन्हें भय एवं आक्रामकता का शिकार बनाती है। कहीं न कहीं आत्महत्या की प्रवृत्ति के उत्पन्न होने में इस सांस्कृतिक विसंगति की भी भूमिका है।

सोशल मीडिया का विशिष्ट वर्ग बन गया है। इसमें से किसान, श्रमिक, आदिवासी, महिलाओं से जुड़े मुद्दे गायब हैं। ऐसे में यह सवाल तो उठता ही है कि सोशल मीडिया हाशिये के लोगों की आवाज क्यों नहीं बन पाया? इस पर सोचा जाना जरूरी है। एक तबका ऐसा भी उभर रहा है जो सोशल मीडिया से ऊब गया है। वह अब किसी भी विषय पर कोई भी प्रतिक्रिया नहीं करता। लोग अब विरोध के स्वर सुनना नहीं चाहते, उन्हें प्रशंसा व समर्थन की आदत हो गई है। इसलिए जब मीडिया मनुष्य को नियंत्रित करने लगे तो समाज में इसके खतरे दिखाई देने लगते हैं, जो विकास के मार्ग में बाधा ही उत्पन्न करते हैं।

■ ज्योति सिडाना
(वरिष्ठ पत्रकार)

विचार

आखिर यह किसकी हार

सुप्रीम कोर्ट से बुधवार को फ्लोर टेस्ट का आदेश आने के बाद भाजपा ने हथियार डाल दिए। पहले उपमुख्यमंत्री अजित पवार और बाद में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस्तीफा दे दिया। संविधान दिवस के दिन हुआ यह घटनाक्रम किसकी जीत है और किसकी हार।

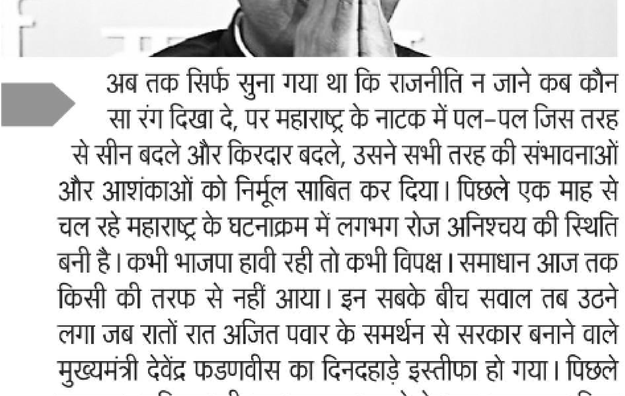

अब तक सिर्फ सुना गया था कि राजनीति न जाने कब कौन सा रंग दिखा दे, पर महाराष्ट्र के नाटक में पल-पल जिस तरह से सीन बदले और किरदार बदले, उसने सभी तरह की संभावनाओं और आशंकाओं को निर्मूल साबित कर दिया। पिछले एक माह से चल रहे महाराष्ट्र के घटनाक्रम में लगभग रोज अनिश्चय की स्थिति बनी है। कभी भाजपा हावी रही तो कभी विपक्ष। समाधान आज तक किसी की तरफ से नहीं आया। इन सबके बीच सवाल तब उठने लगा जब रातों रात अजित पवार के समर्थन से सरकार बनाने वाले मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का दिनदहाड़े इस्तीफा हो गया। पिछले शुक्रवार-शनिवार की रात सरकार बनाने के बाद घटनाक्रम जिस तरह से बदला, उसने भाजपा को बुरी तरह फंसा दिया। बहुमत का जुगाड़ न होते देख पहले एनसीपी में अकेले पड़े उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने इस्तीफा सौंपा, फिर फडणवीस ने भी हथियार डाल दिए। यह सब तब हुआ, जब सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार शाम 5 बजे तक फ्लोर टेस्ट कराने का आदेश दिया था।

फडणवीस को इस्तीफा देने का आदेश दिल्ली से आया, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा अध्यक्ष अमित शाह और कार्यवाहक अध्यक्ष जेपी नड्डा की उच्चस्तरीय बैठक हुई। बैठक में सरकार बचाने की सभी संभावनाओं को टटोला गया, मगर बात बनते न देख भाजपा ने पैर पीछे खींचने में भलाई समझी। हालांकि, यह सोमवार की शाम ही तय हो गया था कि भाजपा बहुमत हासिल नहीं कर पाएगी। हयात होटल में शिवसेना, राकांपा और कांग्रेस के विधायकों ने जिस तरह से एकजुटता दिखाई, उससे भाजपा की सारी योजना धरी रह गई। भाजपा समर्थन हासिल करने के लिए जिन संभावनाओं पर काम कर रही थी, वह काफी पेचीदा था। महाराष्ट्र में सुप्रीम कोर्ट की ओर से बुधवार शाम पांच बजे तक बहुमत परीक्षण की डेडलाइन फिक्स करने के बाद से यह सबसे बड़ा सवाल था कि क्या सीएम देवेंद्र 145 का नंबर जुटा पाएंगे? विपक्ष 162 विधायकों के समर्थन का दावा कर रहा है। 105 विधायकों वाली भाजपा अजित पवार के दम पर बहुमत के दावे पर अडिग थी, मगर ऐसा हो नहीं पाया।

कहा जा रहा था कि एनसीपी के पास कुल 54 विधायक हैं। दल-बदल कानून के प्रावधान के तहत अलग गुट को मान्यता हासिल करने के लिए दो तिहाई विधायकों के समर्थन की जरूरत है। इस लिहाज से अजित पवार को 36 विधायकों का समर्थन चाहिए। अगर अजित 36 या इससे ज्यादा विधायकों का समर्थन हासिल कर लेते हैं तो उन्हें नई पार्टी बनाने में मुश्किल नहीं होगी लेकिन अगर ऐसा नहीं हो पाता है तो बागी विधायकों की सदस्यता खत्म हो सकती है। उनके अलावा करीब 13 निर्दलीय विधायकों के समर्थन का दावा भाजपा पहले ही कर रही थी। बहरहाल, अब जबकि सारी संभावनाएं गौण हो चुकी हैं तो उस व्यक्ति की भी तलाश शुरू हो गई है, जिस पर इस नाकामी का ठीकरा फोड़ा जाए।

भ्रामक विज्ञापनों पर शिकंजा जरूरी

ग्राहकों को अधिक अधिकार देने और उपभोक्ता अदालतों को पहले से ज्यादा मजबूत बनाने संबंधी प्रावधान वाले उपभोक्ता संरक्षण संशोधन विधेयक को लोकसभा में पेश किया गया है। इस बिल में केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण के गठन का प्रस्ताव है। यह प्राधिकरण अनैतिक व्यापारिक गतिविधियों को रोकने और ग्राहकों के अधिकारों की रक्षा के लिए हस्तक्षेप कर सकता है। यह बिल इसलिए भी जरूरी है क्योंकि बीते तीन से भी अधिक दशक से बड़ा प्रयास नहीं हुआ है, जबकि इस बीच ऑन लाइन मार्केटिंग समेत व्यापार के क्षेत्र में बड़ा बदलाव आया है। ऐसी परिस्थिति में ग्राहकों के अधिकारों की रक्षा के लिए पुराने कानून में बदलाव की जरूरत है। हालांकि, अब सरकार ने इस दिशा में पहल की है।

ग्राहकों के हितों की रक्षा के लिए केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण का गठन किया जाएगा, निर्माता और सेवा प्रदाताओं की जिम्मेदारी सिर्फ अपने ग्राहक तक नहीं बल्कि सभी उपभोक्ताओं के प्रति होगी, उपभोक्ता अदालत में ग्राहक को वकील की जरूरत नहीं हो भ्रामक विज्ञापन पर सेलेब्रिटी को भारी जुर्माना भरना होगा और 21 दिनों में हर हाल में शिकायत दर्ज होगी। सामान के निर्माण, सेवा, पैकेजिंग, लेबलिंग में खामी की वजह से ग्राहक की मौत या उसके किसी भी तरह के नुकसान के लिए अब निर्माता ही नहीं विक्रेता भी जिम्मेदार होगा। कुछ ही समय पहले एक नामी बिल्डर के पास अपना घर बुक कराने वाले सैकड़ों आम लोगों ने महेंद्र सिंह धोनी को कानूनी नोटिस भेजा है कि उनके द्वारा किए गए भ्रामक प्रचार के झांसे में आकर उन लोगों ने बिल्डर की योजनाओं में पैसा लगाया था, लेकिन मकान सालों बीतने के बाद भी नहीं मिला।

पैसा लगाने वाले इन निवेशकों का तर्क था कि धोनी इस बिल्डर के ब्रांड अंबेसडर हैं, इसलिए कुछ जिम्मेदारी उनकी भी बनती है। ऐसे में वे या तो उन्हें घर दिलाएं या फिर हर्जाना। कानूनी दबाव बढ़ता देख अब धोनी ने खुद को बिल्डर से अलग कर लिया है, परस्पर सहमति से उन्होंने घोषणा की है कि अब वे उस बिल्डर के ब्रांड अंबेसडर नहीं हैं। जैसा कदम इस समय महेंद्र सिंह धोनी ने उठाया है, कुछ वैसे ही उपाय पिछले दो वर्षों में फास्ट फूड मैगी में हानिकारक तत्व की मौजूदगी के मामले उजागर होने के बाद कई फिल्मी सितारों ने किए थे। इस खाद्य पदार्थ का विज्ञापन करने वाली कई मशहूर हस्तियों-अमिताभ बच्चन, प्रीति जिंटा और माधुरी दीक्षित पर बिहार की एक अदालत ने पुलिस केस दर्ज करने व जरूरत पड़ने पर गिरफ्तार करने के निर्देश भी दिए थे। उत्तराखंड खाद्य सुरक्षा और औषधि प्रशासन विभाग की तरफ से भी मई 2015 में माधुरी दीक्षित को नोटिस भेजा गया था। माधुरी दीक्षित ने इस नोटिस के जवाब में लिखा था कि न तो उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी में मैगी कभी खाई और न ही किसी को बनाकर खिलाई है। माधुरी दीक्षित हों या महेंद्र सिंह धोनी, उनके कदमों से यह सवाल एक बार फिर उठा है कि क्या मशहूर लोगों और सिने हस्तियों को ऐसी चीजों का प्रचार करना चाहिए, जिनकी गुणवत्ता और उपयोगिता आदि को लेकर कई संदेह हो सकते हैं?

बच्चों और महिलाओं को किसी खास वस्तु की तरफ आकर्षित करने के लिए सितारों को विज्ञापन में लाया जाता है और देखते ही देखते उस उत्पाद की बिक्री बढ़ जाती है। यह विज्ञापन जगत की सोची-समझी प्रक्रिया है। मगर इस तरह भोली-भाली जनता को मूर्ख तो नहीं बनाया जाता है? अब जबकि सरकार भ्रामक प्रचार से लोगों को बचाने कानून बना रही है, तो सितारों को भी जिम्मेदारी समझनी हेगी।

क्या उन्हें ऐसी चीजों का बखान करना चाहिए जिनके वे खुद ग्राहक नहीं हैं, जिनका वे खुद तो इस्तेमाल नहीं करते, लेकिन उनके गुणों का बढ़-चढ़कर उल्लेख करते हुए जनता से उन्हें अपनाने की बात कहते हैं। मशहूर हस्तियां ऐसा प्रचार क्यों करती हैं? पिछले साल एक माह (फरवरी) के दौरान भारतीय विज्ञापन मानक परिषद (एएससीआई) की ग्राहक शिकायत परिषद को जिन 167 विज्ञापनों की शिकायतें मिली थीं, उनमें से 73 शिकायतें पर्सनल और हेल्थकेयर वर्ग में भ्रामक विज्ञापनों को लेकर ही की गई थीं और ये शिकायतें सही भी पाई गईं। शिकायतों के आंकड़ों के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि विज्ञापनों द्वारा धोखाधड़ी किस स्तर पर हो रही है? ऐसे में यह समझना भी कठिन नहीं कि इन विज्ञापनों के चमक-दमक भरे दावों पर लगाम लगाना कितना जरूरी है। देखा गया है कि बाजार में किसी भी उत्पाद को चर्चित कराने और उसकी बिक्री बढ़ाने के लिए विभिन्न कंपनियां सिनेमा और खेल जगत की हस्तियों का सहारा लेती हैं।

यह कतई जरूरी नहीं होता कि ये हस्तियां उन सारे उत्पादों का अपने जीवन में इस्तेमाल करते हों, पर विज्ञापनों में उनकी छवि इस तरह पेश की जाती है कि वे उनका धड़ल्ले से इस्तेमाल करते हैं और उनके कई फायदे उन्हें नजर आए हैं। अपने चहेते सितारों को किसी चीज का प्रचार करते देख आम लोगों के मन में यह भावना पैदा होती है कि क्यों न वे भी उन चीजों का इस्तेमाल करें। साबुन, तेल, सूप, नूडल्स, वॉटर प्यूरिफायर से लेकर सेहत बनाने वाली दवाओं तक के प्रचार सिनेमा व खेल जगत की हस्तियां खूब करती हैं। यही नहीं, वे शायद ही कभी जांच अपने स्तर पर कराती हैं कि जिन बातों या फायदों का उल्लेख उन्होंने विज्ञापन में किया है, उनमें कोई सचाई है भी या नहीं। वे विज्ञापनदाता द्वारा सुझाई गई लाइनों और दावों को दोहरा देते हैं जिससे आम जनता में यह संदेश जाता है कि उनके चहेते सितारे तक वे चीजें अपने प्रयोग में ला रहे हैं जो बाजार में आसानी से उपलब्ध हैं और उन्हें खरीदने में कोई हर्ज नहीं हैं।

खास तौर से बच्चों और महिलाओं को किसी खास वस्तु की तरफ आकर्षित करने के लिए ऐसे ही सितारों द्वारा कोई उत्पाद विज्ञापनों में लाया जाता है और देखते ही देखते उस उत्पाद की बिक्री बढ़ जाती है। यह विज्ञापन जगत की सोची-समझी प्रक्रिया है। पर इसमें पेच यही है कि क्या इस तरह भोली-भाली जनता को मूर्ख तो नहीं बनाया जाता है? इस बारे में सचाई यह है कि खेल या सिनेजगत की हस्तियों द्वारा प्रचारित चीजों के विज्ञापनों में यह घोषणा कहीं नहीं होती है कि इन चीजों का इस्तेमाल खुद उन हस्तियों ने किया है। किसी उत्पाद की गुणवत्ता को जांचे-परखे बिना उन्हें खरीदने की सलाह देने के बारे में कुछ नियम देश में पहले से हैं। जैसे खाने-पीने की चीजों के बारे में केंद्रीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग का नियम यह है कि अगर किसी कंपनी का ब्रांड अंबेसडर किसी चीज की खासियत या गुणवत्ता का बखान करता है और वह गुण उसमें नहीं होता है, तो ऐसे विज्ञापन को भ्रामक माना जाता है। ऐसे विज्ञापन के खिलाफ कार्रवाई भी की जा सकती है।

सितारों को दौलत-शोहरत से आगे बढ़कर जनता के हितों के बारे में भी सोचना चाहिए। वे यह कर बरी नहीं हो सकते हैं कि उन्होंने किसी उत्पाद का सिर्फ प्रचार किया है, उसे उन्होंने खुद इस्तेमाल में नहीं लिया है। यह काम कानून के जरिए भी हो सकता है। भ्रामक विज्ञापनों के लिए सितारों को भी दोषी मानकर कठघरे में लाया जाना चाहिए और इसकी वाजिब सजा दी जानी चाहिए। सरकार का कानून बनाना इसलिए जरूरी है ताकि भ्रामक विज्ञापनों के नकारात्मक प्रभावों को लेकर जनता सतर्क रहे। यह तभी जरूरी है, जब जनता को जागरूक करने वाले प्रावधान होंगे।

■ शिवम चौहान
(स्वतंत्र टिप्पणीकार)

ट्विटर

भाजपा ने जिस तरह से सरकार बनाई थी, वह अलोकतांत्रिक था। रात के अंधेरे में सरकार बनाने का हश्र यही होता है। भाजपा को अब सबक मिल गया होगा।

संजय राउत, शिवसेना नेता

सरकार बनाते समय जिस तरह की स्थितियां थीं, उसमें भाजपा ने सरकार बनाई। हम विधायकों की खरीद-फरोख्त नहीं करते, इसीलिए पीछे हट रहे हैं।

रामदास अठावले, केंद्रीय मंत्री

सत्यार्थ

व्यर्थ में होती हैं लड़ाइयां

एक बार एक बुजुर्ग शहद से भरी मटकी लेकर जा रहा था। रास्ते में उसका पांव एक छोटे से पत्थर पर पड़ा, तो वह लड़खड़ा गया और थोड़ा-सा शहद टपक गया। बुजुर्ग आगे चल दिया, मगर शहद पर कई मक्खियां आकर बैठ गईं। मक्खियों को जब एक गिलहरी ने देखा, तो वह फौरन उन पर झपट पड़ी। इससे मक्खियां उड़ गईं। तभी एक बिल्ली ने गिलहरी पर झपट्टा मारा। गिलहरी फौरन भाग गई और तभी एक कुत्ता बिल्ली की तरफ झपटा। बिल्ली तो भाग गई, लेकिन अचानक एक और कुत्ता वहां

आ पहुंचा और तब दोनों आपस में लड़ने लगे। इतने में कुत्तों के मालिक भी आ गए व उन्हें शांत करने लगे, मगर कुत्ते शांत नहीं हुए। तब वे दोनों एक-दूसरे के कुत्तों को पीटने लगे और अंत में आपस में ही झगड़ पड़े। बात बढ़ी, तो उनके घर वाले एवं दोस्त भी आ गए। कुछ ही देर बाद दोनों तरफ के मोहल्ले वाले भी लाठियां लेकर आ डटे। जमकर मारपीट होने लगी। कई लोग जख्मी हो गए। तभी एक साधु ने एक महिला से पूछा-ये लड़ाई क्यों हो रही है? महिला खामोश रही, तो साधु ने एक लड़के से पूछा। उसने भी कोई जवाब नहीं दिया। मगर जब साधु को लड़ाई की असली वजह का पता चला, तो उसने भीड़ को शांत होने को कहा। लड़ाई रुक भी गई। संत ने पूछा-बिना बात समझे लड़ने वालों को आप क्या कहेंगे? सभी मौन थे। साधु फिर बोला-हमारे यहां लड़ाई की जड़ यही है कि लोग जानते नहीं हैं कि वे किस बात पर झगड़ रहे हैं। लड़ाई की जड़ जान लेंगे, तब कभी झगड़ा नहीं होगा। यह सुनकर कुत्तों के मालिकों ने एक-दूसरे से क्षमा मांग ली। इसका आशय यह है कि बिना सोचे-विचारे व उचित-अनुचित जाने बगैर हमें कभी कोई कदम नहीं उठाना चाहिए।

■ मनीषा शर्मा

मेरी आवाज से आकर्षित होकर पुलिसकर्मी ने मेलों और उत्सवों के दौरान खोए बच्चों की उद्घोषणा करने के लिए पुलिस विभाग में मुझे नौकरी का प्रस्ताव दिया। मैं चूंकि तब काम की तलाश में था, इसलिए तैयार हो गया। हालांकि तब तक मैंने सोचा भी नहीं था कि यह काम मेरे जीवन का उद्देश्य बनने जा रहा है। जब मैंने एक उत्सव के दौरान पहली बार माइक संभाला और पूरे दिन में तकरीबन बीस बच्चों को उनके परिजनों से मिलवाया, तो आईजी ने खुश होकर मुझे कुछ रुपए दिए।

उन आईएएस टॉपर्स की कहानी जिनका संघर्ष बन गया मिसाल

जब भी कोई युवा आईएएस, आईपीएस में सेलेक्ट हो जाता है, उसकी प्रतिभा पर हर कोई फक्र करने लगता है। ऐसी कामयाबी हासिल करने वालों में ज्यादातर संपन्न परिवारों के होते हैं, लेकिन जब कोई युवा अपने अभावग्रस्त परिवार के हालात को पछाड़ते हुए देश की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा में काबिज हो जाता है, पूरे समाज के लिए हीरो बन जाता है। आइए, कुछ ऐसी ही प्रशासनिक शख्सियतों से आज रू-ब-रू होते हैं, जिनकी मेहनत पत्थर की लकीर बन कर उभर आई।

नंदिनी गुदड़ी (आईएएस टॉपर, बेंगलुरु)

बेंगलुरू के एमएस रमैय्या इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की सिविल इंजीनियरिंग की छात्रा रहीं आईएएस टॉपर नंदिनी कर्नाटक के कोलार जिले के एक शिक्षक की बेटी हैं। इंजीनियर होने के बावजूद नंदिनी ने कन्नड़ साहित्य को अपने वैकल्पिक विषय के रूप में चुना था। नंदिनी गुदड़ी के लालों की कामयाबी पर दो टूक कहती हैं कि सिर्फ प्रशासनिक सेवा ही क्यों, हम जहां भी हों, अपना सर्वश्रेष्ठ दें। एमएस रमैय्या इंस्टीट्यूट से इंजीनियरिंग के बाद जब वह कर्नाटक के पीडब्ल्यूडी विभाग में नौकरी कर रही थीं, उन्होंने एक दिन सोचा कि वह भी आईएएस अफसर बन सकती हैं और बन गईं। उन्हे पहले प्रयास में ही 642वीं रैंक हासिल हो गई। ये तो रहीं आईएएस नंदिनी की बातें, लेकिन महाराष्ट्र के अंसार अहमद, उत्तर प्रदेश के कुलदीप द्विवेदी, प.बंगाल की श्वेता अग्रवाल, मध्य प्रदेश के नीरीश राजपूत आदि कुछ ऐसे नाम हैं, जो आंधियों में दीप जलाकर उजाले में आए हैं। वक्त ने उन्हें पीछे धकेलने में कोई कसर बाकी नहीं रखी, लेकिन कड़ी मेहनत कर उन्होंने खुद अपना परचम फहरा दिया।

मनोज कुमार रॉय

छात्र जीवन में ऐसे ही होनहार युवाओं में एक रहे हैं मनोज कुमार रॉय, जो दिल्ली में रहकर चुपचाप यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में भी जुटे रहे और अंडा-सब्जी बेचने से लेकर दफ्तर में पोंछा लगाकर अपना खर्च भी निकालते रहे। उन्हे अपनी चौथी कोशिश में कामयाबी मिली और अब वह भारतीय आयुध निर्माणी सेवा अधिकारी (IFoS) हैं। नौकरी के साथ ही वह गरीब छात्रों को यूपीएससी परीक्षा में पास होने के लिए पढ़ाते भी हैं।

अंसार अहमद शेख

एक हैं जालना (महाराष्ट्र) के एक गरीब परिवार में जनमे ऑटो चालक पिता की संतान अंसार अहमद शेख, जो अपनी पहली ही कोशिश में आईएएस बन गए। उन्होंने एकला चलो के अंदाज में एक राह पकड़ी कि पुणे के प्रतिष्ठित कॉलेज में बीए (राजनीति विज्ञान) में पढ़ाई के बाद रोजाना बारह घंटे सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने लगे। एग्जाम में बैठे तो पहली ही बार में 361वीं रैंक पर सेलेक्ट हो गए। उनके पिता तो जीवन भर ऑटो चलाते रह गए, लेकिन गुदड़ी के लाल अंसार पूरी युवा पीढ़ी के लिए मिसाल बन गए।

कुलदीप द्विवेदी

कामयाबी की इन छोटी-छोटी दास्तानों में छिपा है मेहनत कर कुछ भी हासिल कर लेने का रहस्य। ऐसे प्रेरक युवा रहे हैं लखनऊ (उप्र) के कुलदीप द्विवेदी, जिनके पिता सूर्यकांत लखनऊ विश्वविद्यालय में चौकीदारी (सिक्युरिटी गॉर्ड की नौकरी) करते रहे हैं। कुलदीप उनकी सबसे छोटी संतान हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक कुलदीप जिन दिनो यूपीएससी की तैयारी कर रहे थे, उसके लिए अपने परिवार को सहमत करने में लंबा समय लगा। आखिरकार उन्होंने अपनी घर-गृहस्थी की फटेहाली को पछाड़कर वर्ष 2015 में सिविल सेवा परीक्षा में 242वीं रैंक पर आईपीएस सेलेक्ट हो गए।

श्वेता अग्रवाल

एक ऐसी ही अनोखी प्रतिभा हैं पश्चिम बंगाल के एक पंसारी की बेटी श्वेता अग्रवाल, जिन्होंने यूपीएससी परीक्षा में 19वीं रैंक हासिल कर अपनी जिंदगी में ऊंची उड़ान भरी। जिन दिनों उनके माता-पिता गरीबी से जूझ रहे थे, बंदेल के जोसेफ कॉन्वेंट स्कूल से पढ़ाई कर श्वेता कोलकाता सेंट जेवियर्स कॉलेज से आर्थशास्त्र में स्नातक के बाद आईएएस बनने का सपना देखने लगीं। आखिरकार, तमाम अड़चनों पर पार पाते हुए यूपीएससी परीक्षा में अव्वल आ गईं। एक हैं भिंड (मध्य प्रदेश) के एक परिवार में जनमे नीरीश राजपूत, जिनके पिता वीरेंद्र दर्जी का काम करते हैं। यद्यपि उन्हें चौथी कोशिश में सिविल सेवा परीक्षा में 370वीं रैंक की कामयाबी मिली, लेकिन उससे पहले उन्हें सरकारी स्कूल की पढ़ाई करते हुए घर के खराब हालात के चलते लगातार पापड़ बेलना पड़ा।

हृदय कुमार

दृढ़ संकल्प के साथ कड़ी मेहनत कर अपनी गरीबी को कैसे पछाड़ा जा सकता है, यह कोई केंद्रपाड़ा (ओडिशा) के गांव अंगुलाई निवासी बीपीएल धारक किसान-पुत्र हृदय कुमार से सीखे। उनकी भी सफलता की राह में बाधाएं कुछ कम नहीं थीं। इंदिरा आवास योजना के तहत मिले घर में परिवार का गुजर-बसर होता था। हृदय की पढ़ाई-लिखाई के लिए सरकारी स्कूल तक किसान पिता की पहुंच रही, लेकिन उत्कल विश्वविद्यालय में समेकित एमसीए कोर्स करते हुए उन्हे तीसरी कोशिश में सिविल सेवा परीक्षा 1079वीं रैंक हासिल हो गई।

खोए बच्चों को परिवार से मिलाकर मिलता है मूर्ति को सुकून

मूर्ति मेरा नाम है, पर इसके आगे माइक लगना दिलचस्प होने के साथ रोचकता से भरा है। मैं तमिलनाडु के रामेश्वरम का रहने वाला हूं। बचपन से ही मेरी आवाज थोड़ी तेज और भारी थी। यह तकरीबन पचपन वर्ष पहले की बात है। मैं रामेश्वरम में एक होटल में बैठा था। मैंने खाने के लिए कुछ मंगाने के लिए आवाज लगाई। उस दौरान होटल वाले के साथ मेरी कुछ बात हुई। मेरी टेबल के पीछे एक पुलिसकर्मी बैठा हुआ था।

उन्होंने बताया कि मेरी आवाज से आकर्षित होकर पुलिसकर्मी ने मेलों और उत्सवों के दौरान खोए बच्चों की उद्घोषणा करने के लिए पुलिस विभाग में मुझे नौकरी का प्रस्ताव दिया। मैं चूंकि तब काम की तलाश में था, इसलिए तैयार हो गया। हालांकि तब तक मैंने सोचा भी नहीं था कि यह काम मेरे जीवन का उद्देश्य बनने जा रहा है। जब मैंने एक उत्सव के दौरान पहली बार माइक संभाला और पूरे दिन में तकरीबन बीस बच्चों को उनके परिजनों से मिलवाया, तो आईजी ने खुश होकर मुझे कुछ रुपए दिए। उस समय वह एक बड़ी रकम थी। तब से पुलिस विभाग की ओर से मैं हर तरह के छोटे-बड़े कार्यक्रमों और धार्मिक उत्सवों में भीड़-भाड़ के दौरान बिछड़ने वाले लोगों और बच्चों को उनके परिजनों से मिलाने के लिए उद्घोषक का काम करने लगा। पचास वर्ष से ज्यादा वक्त के सफर में मैंने तमिल, अंग्रेजी, मराठी, हिंदी, कई भाषाओं में घोषणा करना सीख लिया, जिस कारण रामेश्वरम जैसे मशहूर तीर्थस्थल पर भी मुझे बुलाया जाने लगा।

इस सफर में मुझे मीठे और कड़वे अनुभव हुए

इस सफर में मुझे मीठे और कड़वे, दोनों ही तरह के अनुभव हुए। जैसे, मुझे इसका दुख है कि मैं खोए हुए सभी बच्चों को उनके मां-बाप और परिवार से नहीं मिला पाया। एक बार एक मेले में एक लड़की खो गई, जिसके लिए पूरे दिन मैंने भूखे रहकर घोषणा की, लेकिन शाम को उसका शव मंदिर के पास के तालाब में तैरता हुआ मिला। उस घटना के बाद मैं कुछ दिन तक बेहद परेशान रहा। मैं अपने काम के मूल्य को जानता हूं, और इसके सेवा भाव को महसूस भी करता हूं।

बच्चों की खोजबीन में भी करता हूं पुलिस की मदद

मैं उद्घोषक तो हूं ही, कई बार बच्चों की खोजबीन में पुलिस की मदद भी करता हूं। एक त्योहार की भीड़-भाड़ में तीन साल का एक बच्चा खो गया। मैंने शाम तक उसका इंतजार किया, जब वह नहीं आया तो मैं पुलिस के साथ मिलकर आसपास के गांव में बच्चे को ढूंढने लगा। आखिरकार देर रात एक घर में बच्चा सुरक्षित मिल गया, दरअसल सुन और बोल न पाने के कारण बच्चा अपने माता-पिता के बारे में कुछ बता नहीं पा रहा था। बड़े उत्सवों में भीड़ के चलते कई बार मुझे जान का जोखिम भी उठाना पड़ा। कई बार लोगों के बीच झगड़े और विवाद की स्थिति आ गई, पर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए मैं वहां मौजूद रहा। यह काम अब मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है और मैंने खुद को इसमें ढाल लिया है।

मैंने अड़तालीस हजार बच्चों को उनके परिजनों से मिलवाया

पिछले पचास साल में मैंने तकरीबन अड़तालीस हजार बच्चों को उनके परिवारों से मिलवाया है। मेरे लिए वह पल बहुत संतोषप्रद होता है, जब खोया हुआ बच्चा अपने माता-पिता से मिलता है। उस बच्चे और उसके परिजनों की आंखों में सुकून देखकर मेरे दिल को भी सुकून मिलता है। यही वजह है कि मैं इस काम को ताउम्र करते रहना चाहता हूं।

किस्मत को दोष न देकर सफलता के लिए नए रास्ते तलाशें

कुछ चुनौतियां बड़ी होती हैं, पर कुछ को हम खुद भी बड़ा बना लेते हैं। जहां जरूरत सीधे रास्तों पर चलने की होती है, हम टेढ़ी राह पकड़ लेते हैं और फिर, कभी दूसरों को तो कभी किस्मत को दोष देने लगते हैं। ये देखना जरूरी है कि कहीं हम ही तो अपने काम और रिश्तों को जटिल नहीं बना रहे हैं।

दूसरों को जगह न देना

अपनी जिंदगी की कहानी के हीरो आप हैं। पर आपकी कहानी को आगे बढ़ने के लिए दूसरों का साथ भी चाहिए होता है। यह साथ तभी मिलता है, जब आप उन्हें अपनी कहानी में शामिल करते हैं। नए पात्रों को अपनाते हैं, उनकी कहानियां सुनते हैं। उनकी समस्याओं में उनके साथ खड़े होते हैं। पर समस्या यह होती है कि हम दूसरों से अपेक्षाएं तो रखते हैं, पर उनकी एहमियत मानने को तैयार नहीं होते। उन्हें उनकी भूमिका का श्रेय नहीं देते। उनसे अपनी बातें नहीं कहते। बेकार की तुलनाएं करके अपनी चिंताएं बढ़ाते हैं।

जोखिम न उठाना

समस्याओं से भागना और खुद को बदलने की कोशिश न करना, समस्याएं बढ़ा देता है। बिजनेस कोच एवं वर्ड स्टाइलिस्ट जूडी स्यूई कहती हैं कि 'हम जितनी चिंता करते हैं, उतनी योजनाएं नहीं बनाते। जितनी योजना बनाते हैं, उतना काम नहीं करते। चिंता करने और हल ढूंढने में फर्क होता है। खुद पर भरोसा रखें।' हर समय दूसरों को खुश करने में रहना हमें जोखिम लेने से रोकता है। अपने मन की सुनें। गलतियां करने से डरे नहीं।'

हर बात पर अहं को आड़े लाना

हर बात को घुमा-फिराकर खुद पर ले आना या खुद पर ले लेना मन को शांत नहीं होने देता। 'वह हमें ही देख रहा है', 'वे मेरे बारे में ही बात कर रहे होंगे', 'उसने यह बात मुझे ही निशाना बनाकर कही', उसने मुझे नीचा दिखाने के लिए वैसा किया... दिन में दूसरों की कई ऐसी बातें होती हैं, जिनका हमसे कोई मतलब नहीं होता। पर हम उसे अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं। खुद पर चोट मान लेते हैं। ध्यान रखें, आपके अलावा भी दूसरों के पास सोचने और करने के लिए बहुत कुछ हो सकता है। जरूरी नहीं कि दूसरे जो कर रहे हैं, आपको दुखी करने के लिए कर रहे हैं। हर बात को व्यक्तिगत ना बनाएं।

हर समय बुरा ही सोचना

जरा सा कुछ होता है कि हम सब कुछ बुरा होने की आशंका से घिर उठते हैं। मन में बुरे पक्षों की कड़ियां ही जोड़ने लगते हैं। नतीजा, हम खुद को नई चिंताओं और डर में जकड़ लेते हैं। यह सोचिए तो कि सब कुछ बुरा आपके साथ ही क्यों होगा।

बेकार की अपेक्षाएं रखना

माना कि आप दूसरों को बहुत प्यार करते हैं। आप सब कुछ उन्हीं को ध्यान में रखकर करते हैं। पर यह जरूरी नहीं कि दूसरे भी ऐसा ही करें। उनकी जिंदगी का विस्तार कुछ और किनारों पर भी हो सकता है। लाइफ कोच हेनरी जुनटिला, वेक अप क्लाउड में लिखती हैं कि 'दूसरों से अपेक्षाएं जितनी कम होंगी, खुशी उतनी ही ज्यादा होगी। सबकी जरूरतें समय के साथ बदलती हैं। अपनी जरूरतों का भी ध्यान रखें।'

बीती बातों में अटके रहना

ऐसा कतई नहीं कि 15 साल पहले जैसा दूसरे करते थे, वैसा आज भी करेंगे। या फिर बीते कल में कुछ बुरा हुआ है तो आगे भी बुरा ही होगा। लेखक और वकील टिम होच कहते हैं कि' जिंदगी की किताब में कई पाठ होते हैं। किताब पूरी पढ़ने के लिए हर चैप्टर को पढ़ना जरूरी है। एक ही पाठ पर अटके न रहें।' प्यार, सेहत, रिश्ते और पैसा इनके बारे में अपनी सोच को ठीक रखें। हर चीज को काबू में करने की बजाए, नई चीजों को गले लगाने का साहस रखें।

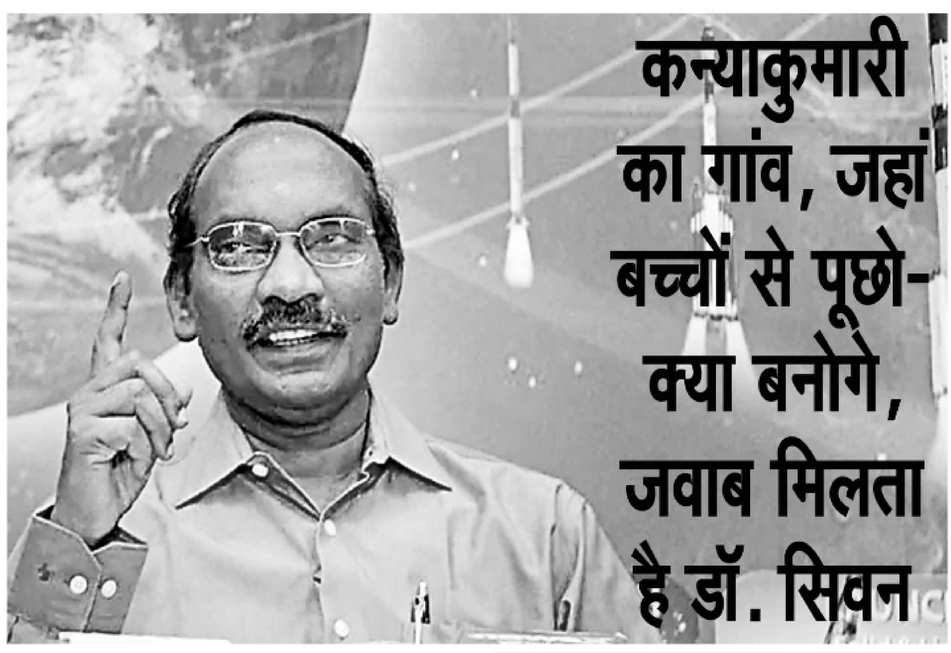

कन्याकुमारी का गांव, जहां बच्चों से पूछो- क्या बनोगे, जवाब मिलता है डॉ. सिवन

कन्याकुमारी का सरक्कलविलाई गांव, जहां सिवन पैदा हुए, जहां पले-बढ़े वो आज उन पर जान लुटाता है। उन्हें प्यार करता है। इस गांव के बच्चे डॉ. सिवन से प्रेरणा लेते हैं। इस गांव में डॉ. सिवन की मेहनत, संघर्ष और सफलता की ही बातें होती हैं। इसके अलावा कोई चर्चा होती ही नहीं है। इस गांव में रहने वाला डॉ. सिवन का परिवार, उनके स्कूल के दोस्त और गांव के युवाओं को इसरो चीफ और उनके काम पर गर्व है।

इसरो चीफ पूरे गांव के रोल मॉडल

इस गांव के बच्चे कहते हैं कि डॉ. सिवन से हम यह सीखते हैं कि कोई भी काम कठिन नहीं है। कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। हम सब सिर्फ उनकी तरह पढ़-लिखकर आगे बढ़ना चाहते हैं। गांव के एक युवा प्रवीण ने कहा कि यहां ज्यादातर लोग डॉ. सिवन को रोल मॉडल मानते हैं। पहले उन्हें कोई नहीं जानता था, लेकिन इसरो की वजह से अब उन्हें हर कोई जानता है। हमें गर्व होता है कि हम उसी गांव से हैं, जहां डॉ. सिवन रहते हैं। इस गांव में आप किसी भी बच्चे से पूछो कि आप बड़े होकर क्या बनोगे? जवाब मिलता है - डॉ. सिवन।

सरक्कलविलाई गांव भी प्रसिद्ध

मीडिया में सरक्कलविलाई गांव में डॉ. सिवन के रिश्तेदारों से मुलाकात की, उनसे बातें कीं। इसरो चीफ डॉ. सिवन की भांजी निशा उनसे बहुत ज्यादा प्रेरित है, निशा उन्हें प्यार से चिटप्पा कहती है। निशा ने बताया कि चिटप्पा बहुत मुश्किलों से आगे बढ़े हैं। उनकी पढ़ाई-लिखाई बेहद संघर्षपूर्ण रही है। अभी वो इसरो चेयरमैन हैं, लेकिन वे हमेशा हम सब से बातें करते हैं। कन्याकुमारी फेमस है, लेकिन चिटप्पा की वजह से हमारा गांव भी प्रसिद्ध हो गया है। इस गांव के सभी लोग उनके काम से खुश हैं।

सिवन की वजह से बढ़ीं सुविधाएं

उनके भाई नारायण पेरुमल कहते हैं कि जब सारे बच्चे खेलने के लिए बाहर जाते थे, तब सिवन लाइब्रेरी में पढ़ता रहता था। वह अखबार भी बहुत पढ़ता था। आज उसने जो भी हासिल किया है वह एक जीत है। एक ग्रामीण बताते हैं कि जिस सरकारी स्कूल में सिवन पढ़ते थे, आज वह अच्छा हो गया है। उसमें सारी सुविधाएं हैं। यह सब सिर्फ सिवन की वजह से हुआ है। तमिल मीडियम से प्राइमरी और हायर सेकंडरी स्कूल में पढ़ने वाले सिवन ने कन्याकुमारी के एसटी हिंदू कॉलेज से ग्रेजुएशन किया था। गांव के मदनकुमार बताते हैं कि जब सिवन पांचवीं क्लास में थे, तब मैं पहली कक्षा में था। सिवन हमेशा क्लास में फर्स्ट आते थे। उन्हें 100 में 100 अंक मिलते थे। वो हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं। हमें खुशी होती है कि जब हम ये देखते हैं कि हमारे गांव की मिट्टी के लाल को पूरे देश प्यार करता है।

विज्ञान में सफलता और असफलता से उतना फर्क नहीं पड़ता, जितना उसके लिए किए गए संघर्ष और समर्पण से। ऐसे ही समर्पण और संघर्ष की कहानी का जीता जागता उदाहरण हैं, इसरो के चेयरमैन डॉ. कैलाशावदिवु सिवन। डॉ. सिवन के लिए इसरो (Indian Space Research Organisation - ISRO) जैसे बड़े संस्थान का नेतृत्व करना इतना आसान नहीं है, न ही वे आसानी से इस पद पर पहुंचे हैं। अपने पिता से साथ खेतों में काम करना, नंगे पैर स्कूल जाना, छोटे सरकारी स्कूल में पढ़कर इसरो के चेयरमैन तक बनने में संघर्षों की आग में तपकर आगे बढ़े हैं डॉ. सिवन।

पूरे गांव को है अपने लाल से प्यार

पूरा सरक्कलविलाई गांव इसरो चीफ डॉ. सिवन से प्यार करता है। उन्हें प्रेरणस्रोत मानता है। एक लड़का जिसके पास सुविधाओं की कमी थी, आज वह पूरे देश का नाम रोशन कर रहा है। इस गांव को पूरा भरोसा है कि एक दिन भारत अंतरिक्ष विज्ञान में दुनिया का सबसे अग्रणी देश बन जाएगा। पूरी दुनिया भारत की तरफ देखेगी।

Printed, Published & Owner by ATUL SHARMA & Printed at SARANGLE PRINTERS, BASTI GUZAN JALANDHAR (PUNJAB) and Published from ATUL SHARMA, NN-453 GOPAL NAGAR JALANDHAR (PUNJAB)

Editor: ATUL SHARMA*

*Responsible for selection of News under the PRB ACT. PUNHIN/2019/77863, All Rights Reserved. Reproduction in whole or in part without permission is prohibited. All disputes shall be settled at Jalandhar jurisdiction only.

जहां स्वार्थ समाप्त होता है मानवता वहीं से प्रारंभ होती है

■ जालंधर/नीरज

मानव योनि में जन्म लेने मात्र से जीव को मानवता प्राप्त नहीं होती। यदि मनुष्य योनि में जन्म लेने के बाद भी उसमें स्वार्थ की भावना भरी हुई है तो यह मानव होते हुए भी राक्षसी वृत्ति की पायदान पर खड़ा रहता है। यदि व्यक्ति स्वार्थ की भावना को त्याग कर हमेशा परमार्थ भाव से जीवन याजन करे तो निश्चित रूप से वह एक अच्छा इन्सान है, यानि सुदृढ मानवता की श्रेणी में खड़ा होकर पर सेवा कार्य में रत है। क्योंकि परमार्थ की भावना ही व्यक्ति को महान बनाती है। श्री कृष्ण की लीलाओं में पूतना चरित्र पर व्याख्यान देते हुए आचार्य श्री ने कहा कि कंस स्वयं को सब कुछ समझ लिया। हससे पड़ा कोई न हो। ऐसा निश्चय कर ब्रज क्षेत्र में जितने बालक पैदा हुए हो उनको मार डालो, और इसके लिये पूतना राक्षसी को बेजा तो प्रभु श्री कृष्ण ने पूतना को मोक्ष प्रदान किया ही इधर कंस प्रतापी राजा उग्रसेन का पुत्र होते भी स्वार्थ लोलुपता अधिकाधिक होने के कारण राक्षसो की श्रेणी में आ गया और भगवान श्री कृष्ण ने उसका संहार किया। आचार्य श्री ने कहा कि हम जीवन में वस्तुओं से प्रेम करते है और मनुष्यों का उपयोग करते है। ठीक तो यह है कि हम वस्तुओं का उपयोग करें और मनुष्यों से प्रेम करें। इसलिये हमेशा प्रेम की भाषा बोलिये जिसे बहरे भी सुन सकते है और गूंगे भी समझ सकते है। प्रभु की माखन चोरी लीला हमें यही शिक्षा प्रदान करती है। विशेष महोत्सव के रूप में आज श्री गिरिराज पूजन (छप्पन भोग महोत्सव) विशेष धूम-धाम से मनाया गया। कल की कथा में विशेष महोत्सव के रूप में श्री रूक्मणी विवाह महोत्सव अति हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा।

एनसीपी विधायकों की इच्छा- अजीत पवार बनें उपमुख्यमंत्री

■ मुंबई/ब्यूरो

कल यानी 28 नवंबर को शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे. सूत्रों के मुताबिक कांग्रेस के बालासाहेब थोराट और एनसीपी के जयंत पाटिल डिप्टी सीएम बनेंगे। इस बीच एनसीपी विधायकों की बैठक में विधायकों ने इच्छा जाहिर की कि कल मुख्यमंत्री के साथ उपमुख्यमंत्री भी शपथ लें। एनसीपी विधायक सुनील सिलके ने कहा कि अजित पवार के वापस आने से खुशी हुई है. ज्यादातर विधायकों की इच्छा है कि अजीत पवार उपमुख्यमंत्री बनें। हालांकि शरद पवार जो फैसला करेंगे वो सबको मंजूर होगा। उधर आज कई नेता विधानसभा में शपथ लेने के लिए

पहुंचे। सुप्रिया सुले सभी नेताओं का स्वागत कर रही थीं। इस दौरान अजित पवार भी विधानसभा पहुंचे। सभी गिले-शिकवे भुलाकर सुप्रिया सुले ने अजित पवार के गले लगीं और उनका स्वागत किया। बता दें कि कल रात अजित पवार ने शरद पवार के आवास पर जाकर उनसे मुलाकात की थी। कल शाम पांच बजे से मुंबई के शिवाजी पार्क में शपथग्रहण समारोह होगा।

उद्धव ठाकरे, ठाकरे परिवार के पहले ऐसे सदस्य होंगे जो राज्य की कमान संभालेंगे। फिलहाल उद्धव ठाकरे न तो विधानसभा और न ही विधान परिषद के सदस्य है।

ऐसे में उन्हें अगले छह महीने के भीतर विधानसभा या विधान परिषद की सदस्यता लेनी होगी। आदित्य ठाकरे, ठाकरे परिवार के पहले ऐसे सदस्य हैं जिसने कोई चुनाव लड़ा है। ऐसे में अब उद्धव ठाकरे दूसरे ऐसे सदस्य होंगे तो किसी सदन के सदस्य होंगे।

पंजाब की सरकारी प्रिंटिंग प्रैसों का किया जायेगा आधुनिकीकरण-साधु सिंह धर्मसोत

विभागीय अधिकारियों को एक्शन प्लान बनाने की हिदायत

■ चंडीगढ़/ब्यूरो

पंजाब की सरकारी प्रिंटिंग प्रैसों को आधुनिक बनाया जायेगा जिससे इनको समय का साथी बनाया जा सके। पंजाब के प्रिंटिंग और स्टेशनरी विभाग के मंत्री स. साधु सिंह धर्मसोत ने आज विभाग के उच्च अधिकारियों के साथ की मीटिंग के दौरान यह प्रगटावा किया।

स. धर्मसोत ने अधिकारियों को सरकारी प्रैसों का आधुनिकीकरण करने के लिए एक्शन प्लान तैयार करने की हिदायत देते हुए कहा कि उन खरीद और छपाई से सम्बन्धित नियमों को भी फिर सुधारा जाये जो आज के समय में सार्थक नहीं रहे। उन्होंने कहा कि साल 1975 में प्रिंटिंग और स्टेशनरी सम्बन्धित नियमों को पुन: सुधारने के लिए कार्यवाही अमल में लाई जाये जिससे पुरानी प्रक्रिया को आज के समय के हिसाब से अधिसूचित किया जा सके। स. धर्मसोत ने अधिकारियों को आदेश देते हुए कहा कि छपाई और अन्य सामग्री खरीदने सम्बन्धी किये टैंडरों में नियमों की समुची जानकारी देनी और टैंडरों का सार्वजनिक स्तर पर प्रचार करना यकीनी बनाया जाये। उन्होंने कहा कि जिस विभाग से सम्बन्धित टैंडर जारी किया जाना है, टैंडर से सम्बन्धित कमेटी में सम्बन्धित विभाग का एक नुमायंदा भी शामिल किया जाये। उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा कि फ्लैट रेट /रेट कांट्रैक्ट करने के समय यह यकीनी बनाया जाये कि यह एक ही समय 5-6 फर्मों के साथ किया जाये जिससे एमरजैंसी स्थिति में छपाई आदि का कार्य जल्दी करवाया जा सके। उन्होंने कहा कि यह यकीनी बनाया जाये कि फ्लैट रेट /रेट कांट्रैक्ट मार्केट रेट से अधिक नहीं होना चाहिए।

प्रिंटिंग और स्टेशनरी विभाग के मंत्री ने विभाग द्वारा खरीदी जाने वाली 56 किस्मों की स्टेशनरी आइटमें घटाईं जाएँ और उन आइटमों को ही खरीदा जाये जो अत्यधिक ज़रूरी हैं। उन्होंने निर्धारित बजट के अनुसार ही स्टेशनरी खरीदने की हिदायत भी दी। उन्होंने कहा कि ख़रीदी गई आइटम का मानक चैक करने के लिए सम्बन्धित फर्म की प्राईवेट मार्केट में बिक रही आइटम के साथ समय -समय पर मिलान किया जाये। इस मौके पर प्रिंटिंग और स्टेशनरी विभाग के सचिव श्री वी.के. मीना, कंट्रोलर श्रीमती माधवी कटारिया के अलावा विभाग के सीनियर अधिकारी उपस्थित थे।

बच्चों की सुरक्षा और संभाल के लिए काम कर रही गैर-सरकारी संस्थाएं अपने आप को रजिस्टर्ड करवाएं -सपरा

'अन-रजिस्टर्ड संस्थाओं के विरुद्ध कार्यवाही की जायेगी'

■ चंडीगढ़/ब्यूरो

पंजाब सरकार ने जरूरतमंद बच्चों की सुरक्षा और संभाल के लिए उनको मुफ्त रिहायश, खाना, पढ़ाई, मैडीकल सुविधाएं आदि मुहैया करवाने में लगी सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं का रजिस्टर्ड होना लाज़िमी बना दिया है। इसकी जानकारी देते हुए आज यहाँ सामाजिक सुरक्षा और महिला एवं बाल विकास विभाग की डायरैक्टर श्रीमती गुरप्रीत कौर सपरा ने बताया कि इन संस्थाओं को जुवेनायल जस्टिस (केयर एंड प्रोटैक्शन ऑफ चिल्ड्रेन) एक्ट 2015 की धारा 41 (1) के अधीन रजिस्टर्ड करवाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि अगर कोई गैर-सरकारी संस्था उपरोक्त कार्य कर रही है और अभी तक रजिस्टर्ड नहीं हुई तो वह तुरंत जिला प्रोग्राम अफ्सर /जिला बाल विकास अधिकारी के साथ संपर्क करके संस्था को रजिस्टर्ड करवाने के लिए 31 दिसंबर, 2019 से पहले-पहले अपने दस्तावेज़ जमा करवाएं। उन्होंने कहा कि निर्धारित तारीख के बाद जे.जे. एक्ट के अधीन रजिस्टर्ड न हुई संस्था काम करती मिली तो उसके विरुद्ध जुवेनायल जस्टिस (केयर एंड प्रोटैक्शन ऑफ चिल्ड्रेन) एक्ट 2015 की धारा 42 के अनुसार कार्यवाही की जायेगी।

खत्म नहीं हो रही चिदंबरम के हिरासत की मियाद, पूरा करेंगे जेल में रहने का शतक

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

आईएनएक्स मीडिया मामले में हिरासत में 98 दिन बिता चुके पी चिदंबरम की मुश्किलें लगातार कम नहीं हो रही हैं। सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई टलने के बाद विशेष अदालत ने चिदंबरम की न्यायिक हिरासत को फिर से बढ़ा दी है। आईएनएक्स मीडिया मामले में उनकी हिरासत अवधि

11 दिसंबर तक के लिए बढ़ा दी गई है। इससे पहले 15 नवंबर को दिल्ली हाईकोर्ट ने 15 नवंबर को चिदंबरम की जमानत याचिका खारिज कर दी थी। कोर्ट ने कहा था कि प्रथम दृष्टया उनपर आरोप गंभीर हैं और उन्होंने अपराध में सक्रिय और महत्वपूर्ण भुमिका निभाई है।

चरनजीत सिंह चन्नी द्वारा राधा स्वामी सत्संग प्रमुख की पत्नी शबनम ढिल्लों के देहांत पर दुख का प्रगटावा

■ चंडीगढ़/ब्यूरो

पर्यटन एवं सांस्कृतिक मामलों संबंधी मंत्री स. चरनजीत सिंह चन्नी ने आज डेरा राधा स्वामी के प्रमुख बाबा गुरिन्दर सिंह ढिल्लों की पत्नी शबनम ढिल्लों के देहांत पर गहरे दुख का प्रगटावा किया है। शौक संदेश में श्री चन्नी ने कहा कि शबनम ढिल्लों एक दयालु शख्सियत थीं, जिन्होंने हमेशा गरीबों और समाज के दबे कुचले वर्गों की सेवा की। दुखी परिवार के साथ हमदर्दी का प्रगटावा करते हुए उन्होंने दिवंगत आत्मा की आत्मिक शान्ति और परिवार को ईश्वरीय आदेश मानने का बल प्रदान करने के लिए परमात्मा के समक्ष अरदास की।

उद्योग विभाग द्वारा सार्वजनिक खरीद (मेक इन पंजाब को प्राथमिकता) आदेश 2019 नोटीफाई

■ चंडीगढ़/ब्यूरो

स्थानीय उद्योग को उत्साहित करते हुए निर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कैप्टन अमरिन्दर सिंह के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार द्वारा सार्वजनिक खरीद (मेक इन पंजाब को प्राथमिकता) आदेश 2019 नोटफाई किया गया है। यह कदम राज्य सरकार के विभाग और इसकी एजेंसियों द्वारा की जा रही सार्वजनिक खरीद में क्षेत्र को खरीद सम्बन्धी प्राथमिकता देने के अलावा रोज़गार के अवसर पैदा करने और आय में वृद्धि को यकीनी बनाएगा।

इस संबंधी जानकारी देते हुए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि पंजाब के राज्यपाल द्वारा इस आदेश को मंजूरी मिलने के बाद इस सम्बन्धी नोटिफिकेशन पहले ही जारी किया जा चुका है।

अगर सप्लायर का खरीद के लिए पेश किया गया उत्पाद इस आदेश के अंतर्गत या समर्थ विभागों द्वारा निर्धारित कम से कम स्थानीय सामग्री की शर्त को पूरा करता हो तभी उस सप्लायर को स्थानीय सप्लायर माना जायेगा।

राज्य सरकार की औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करने की वचनबद्धता को दोहराते हुए विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव विनी महाजन ने विश्वास जताया कि विभाग द्वारा शुरू किये गए विभिन्न उद्योग समर्थकीय प्रयास औद्योगीकरण की प्रक्रिया में तेज़ी लाएंगे जिसका समाज के सभी वर्गों को लाभ मिलेगा। प्रवक्ता ने आगे बताया कि राज्य सरकार के नियंत्रण अधीन खरीद एजेंसियों द्वारा की गई पूरी खरीद प्रक्रिया में स्थानीय सप्लायरों को खरीद सम्बन्धी प्राथमिकता दी जायेगी। टैंडर/बोली प्रक्रिया के समय स्थानीय उत्पादक /सप्लायरों को स्वै-प्रमाण पत्र प्रदान करने की जरूरत होगी कि पेश की गई चीज़ कम से कम स्थानीय सामग्री की शर्त को पूरा करती हो और इसके अलावा उस स्थान का विवरण देती है जहाँ लोकल वैल्यु ऐडिशन की गई है।

प्रवक्ता ने बताया कि इस आदेश का उल्लंघन करने पर अगर किसी भी खरीद एजेंसी द्वारा किसी सप्लायर पर रोक लगाई गई हो तो वह इस आदेश के अधीन रोक की सीमा तक किसी अन्य खरीद एजेंसी द्वारा खरीद प्रक्रिया में प्राथमिकता के योग्य नहीं होगा।

कंट्रोलर ऑफ स्टोरज के अधीन गठित कमेटी को सप्लायरों पर लगाई रोक सम्बन्धी सभी मामलों को पढ़ने के लिए अधिकारित किया गया है। वित्त विभाग, आबकारी और कर कमिश्नर और कंट्रोलर प्रिंटिंग और स्टेशनरी के नामज़द व्यक्तियों के अलावा अतिरिक्त कंट्रोलर, कंट्रोलर ऑफ स्टोरज़ (मैंबर सचिव) और डायरैक्टर प्रशासनिक सुधारों के नामज़द व्यक्ति इस कमेटी के अन्य मैंबर हैं।

मन्दिर में बच्चों ने भजनो द्वारा भगतों को किया निहाल

■ जालंधर/नीरज

श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ मन्दिर दिलबाग नगर की और से एक बाल सभा करवाई गई जिस में बाल कलाकारों ने भजन गा कर सब को निहाल कर दिया। मानवीं, संयोगता, रूही, सुनैना, जेतन, सांची, वंदना, सुमित, आरियन, डेजी और कई बच्चों ने सुन्दर-सुन्दर भजन गा कर आये हुये भगतों का अपने संग भजन बोलने में मजबूर कर दिया इस के पश्चात कड़ा पूड़ी का प्रशाद भी लगाया गया। मुख्य महेमान प्रदीप कुमार काका ने नन्हे मुन्ने बच्चों के गिफ्ट दे कर सम्मानित किया। सभा के मैंबर राममूर्ती जी, रमेश ठाकूर, अरून सेठ, हरजीत हीरा, सोनू वर्मा, राधे पण्डित जी व आदि माजूद थे।

65वीं स्कूल पंजाब एथलेटिक्स में खिलाडियों ने जीते गोल्ड मेडल

■ जालंधर/नीरज

पंजाब एथलेटिक्स एसोसिएशन की तरफ से संगरूर के वाँर हीरो स्टेडियम में 65 वीं स्कूल पंजाब एथलेटि1स मीट में जालंधर के खिलाडियों का शानदार प्रदर्शन रहा। खिलाड़ी नेहा ने 1000 मीटर हर्डल में गोल्ड, 400 मीटर में कांस्य, 4* 100 मीटर रिले में गोल्ड मेडल जीता। रमनदीप कौर ने 400 मीटर हर्डल में कांस्य, 100 मीटर हर्डल में कांस्य पदक जीता। अनमोल प्रीत कौर ने 400*100 मीटर रिले में गोल्ड मेडल, राजदीप कौर ने 400* 100 मीटर रिले में सिल्वर मेडल जीता। इसके अलावा मिशन तंदरूस्त पंजाब एथलेटिक्स मीट एनआईएस पटियाला में लड़कों के वर्ग में विजय सिंह ने 4* 100 मीटर रिले में गोल्ड मेडल जीता।

Lic No : 933/ALC-4/LA/FN:1184

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE

CONSULTING DESIGN TRAINING

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE

ISO CERTIFIED 2015 COMPANY

IELTS • PTE • TOEFL

SPOKEN ENGLISH

TOURIST VISA | STUDY VISA | PR

WORK PERMIT | HOLIDAY PACKAGES

Ankush Sharma

Chartered Engineer

Alumni M.S.(Software Engineering), BITS Pilani

CANADA AUSTRALIA USA U.K SINGAPORE EUROPE

9988115054 • 9317776663

REGIONAL OFFICE : S.C.O No. 10, Gopal Nagar, Near Batra Palace, Jal.

HEAD OFFICE : S.C.O No. 21-22, Kuldip Lal Complex, Highway Plaza, GT Road, Adjoining Lovely Professional University, Phagwara.

E-mail : ankush@innovativetechin.com • hr@innovativetechin.com

Website : www.innovativetechin.com • FB/Innovativetechin